International Journal of Emerging Voices in Education
Volume 2 | Issue 6 | June 2026 | ISSN: 3107-958X (Online)
Available online at: https://ijeve.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijeve.v2i6.62

इंटरनेट का उपयोग सामाजिक सम्पर्क के साधन के रूप में कथित प्रभाव का अध्ययन

डॉ. अभिषेक सेंगर[1] & ज्योत्सना कुमारी गौतम[2]

[1]शोध निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई

[2] शोधार्थी, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

[2]**Email:** jg220188@gmail.com

Received: 04 June 2026 | **Accepted:** 13 June 2026 | **Published:** 30 June 2026

Abstract (सारांश)

इस शोध पत्र के माध्यम से इंटरनेट का उपयोग सामाजिक संपर्क के साधन के रूप में कथित प्रभाव के अध्ययन का विश्लेषण किया गया है। आज की आवश्यक आवश्यकताओं में से एक इंटरनेट पहुंच भी अति आवश्यक है। इसका महत्व पीने के पानी, बिजली, स्मार्टफोन आदि से कम नहीं है। इंटरनेट रिश्तों को मजबूत बनाता है तथा इंटरनेट के माध्यम से ही आनलाइन संचार बहुत ही सरल और आसान हो गया है। यह शोध पत्र यह जानने में मदद करता है कि किस प्रकार इंटरनेट का उपयोग सामाजिक संपर्क के साधन के रूप में मानव को अत्यधिक प्रभावित कर रहा है।

मुख्य शब्द: *इण्टरनेट,सामाजिक सम्पर्क*

प्रस्तावना

आजकल दुनिया में तेजी से टेक्नोलॉजी बढ़ रही है जिससे दुनिया तेजी से डिजिटल हो रही है। आजकल हम चीजे ऑनलाइन खरीदते है। इंटरनेट हमें वस्तुओं को करीब लाते हुए हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन गई। लेकिन एक सवाल यह उठता है कि क्या इंटरनेट सामानिक संपर्क को बेहतर बनाने में योगदान कर रहा है या नहीं। इस बात से इकार नहीं किया जा सकता है कि इंटरनेट का मानव संचार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है परंतु इसके साथ ही साथ इंटरनेट का नकारात्मक प्रभाव मी उतना ही पड़ता है। इंटरनेट जैसे नई तकनीकी के आगमन ने वर्तमान नई पीढ़ी के लिए एक नए युग की शुरुआत की है। इंटरनेट संचार एक बेहतरीन संचार के रूप में उभरा है। पहले लोग जहां संपर्क के लिए डाक टेलीफोन या व्यक्तिगत मुलाकात का सहारा लेते थे, वहीं अब इंटरनेट के माध्यम से सैकड़ों हजारों किलोमीटर दूर बैठे व्यक्ति से बात करना संभव हो गया है।

आज के युग में सोशल नेटवर्किंग साइट्स (जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर) मैसेजिंग एप (जैसे व्हाट्सऐप, टेलीग्राम) और विडियो ऐप्स (जैसे जूम् गूगल मीट) ने सामाजिक सम्पर्क को अत्यधिक सहज, सरल एवं सुलभ बना दिया है। इंटरनेट संचार के एक बेहतरीन उपकरण और संचार मंच के रूप उभरा है। इंटरनेट संचार अनुप्रयोगों जैसे-त्वरित संदेश, ब्लॉग और किशोरों के बीच सामाजिक नेटवर्किंग साइटो की बढ़ती लोकप्रियता के साथ इंटरनेट उनके विकास के लिए महत्वपूर्ण सामाजिक संदर्भ बन गया है।

इंटरनेट कोरोना वायरस संकट के दौरान विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा है, जहां ऐसे संकट में लोग घर के सदस्यों से दूर रहने पर लोग मजबूर थे. उतना ही इंटरनेट से जुड़े रहे।

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. IJEVE Published by Surya Multidisciplinary Publication.

सकारात्मक प्रभाव

दूरस्थ संबंधों को समान बनाए आसान- इंटरनेट के माध्यम से आजकल मनुष्य अपनों से दूर बैठे लोगों के साथ सरलता पूर्वक संपर्क स्थापित कर सकता है। अब लोगों से मिलने के लिए उसे व्यक्तिगत संपर्क के अत्यधिक आवश्यकता नहीं होती। मनुष्य वीडियो कॉल या फोन के जरिए दूरस्थ लोगों से संपर्क स्थापित कर सकता है।

समान रुचियों वाले लोगों से सम्पर्क स्थापित करने में सरल- इंटरनेट के माध्यम से अब व्यक्ति अपने समान रुचि रखने वालों से अत्यंत सरल ढंग से संपर्क स्थापित कर सकता है। आज वर्तमान समय में सोशल मीडिया के माध्यम से यह अत्यंत सुविधाजनक हो गया है।

आपातकालीन परिस्थितियों में त्वरित संवाद- इंटरनेट के माध्यम से आपातकालीन स्थिति में लोगों से तुरंत संपर्क स्थापित किया जा सकता है।

नकारात्मक प्रभाव

व्यक्तिगत संपर्क में कमी- इंटरनेट के आ जाने से मनुष्यों के बीच व्यक्तिगत संपर्क अत्यधिक कम हो गया है। लोग अब व्यक्तिगत संपर्क की अपेक्षा सोशल मीडिया, गूगल मीट, जूम कॉल इत्यादि का अत्यधिक प्रयोग करने लगे हैं। जिस की व्यक्तिगत संपर्क में अत्यधिक कमी आई है।

निजी जीवन में हस्तक्षेप और गोपनीयता की चिंता की बढ़ाना- आजकल का मनुष्य अपना अत्यधिक समय इंटरनेट के माध्यम से सोशल मीडिया पर अत्यधिक समय व्यतीत करता है। आजकल इंस्टाग्राम, फेसबुक इत्यादि के माध्यम से जितना लोगों से संपर्क स्थापित करना आसान है, उतना ही मनुष्य के निजी जीवन में इसका हस्तक्षेप बढ़ गया है।

फेक न्यूज और अफवाहों का तेज प्रसार व प्रसार करना- इंटरनेट के माध्यम से जहां सूचनाओं को जल्दी से जल्दी लोगों तक पहुंचा जा सकता है। इसके लाभ के साथ-साथ इसके दुष्परिणाम भी देखने को मिलते हैं। जिससे कि फेक न्यूज़ और अफवाहों का प्रसार आजकल ज्यादा हो गया है। जिसमें की मुख्य भूमिका Meta AI निभा रहा है। इसके माध्यम से लोग वर्चुअल दुनिया का निर्माण कर लेते हैं। साथ ही साथ अफवाहों का तेजी से प्रसार भी होने लगता है।

संबंधित साहित्य सर्वेक्षण

कर्नाडीस सिल्विया (2017) "किशोरों में इंटरनेट के उपयोग और उससे संबंधित कारकों का एक मनवैज्ञानिक अध्ययन" इस शोध के अध्ययन से पता चलता है कि पुरुष और महिलाओं के इंटरनेट उपयोग करने की सीमा में कोई अंतर नहीं है. लेकिन वे ऑनलाइन उपयोग की जाने वाली सामग्री में भिन्न हैं। सहशिक्षा विद्यालयों और समान लिंग विद्यालयों के विद्यार्थियों के इंटरनेट उपयोग में कोई अंतर नहीं है। इटरनेट का उपयोग सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध है और आक्रामकता और अवसाद से भी संबंधित है। इंटरनेट को सूचना की व्यापक उपलब्धता सामाजिककरण के तरीके शौक में वृद्धि ऑनलाइन गतिविधियों के विकल्प के साथ-साथ अर्थवावस्था जिसके साथ उपरोक्त सभी गतिविधिया की जा सकती है, के कारण इंटरनेट को आकर्षक माना जाता है। किशोर अक्सर तनावपूर्ण स्थितियों से निपटने के लिए इंटरनेट का उपयोग करते हैं। इंटरनेट का किशोरों की मनोदशा पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह का प्रभाव पडता है।

बागांजा, प्रिस्का इसिडोर (2017) " इंटरनेट बैंकिग का उपयोग करने का इरादा उपयोगकर्ताओं और गैर-उपयोगकर्ताओं के बीच अंतर और महसूस की गई इच्छा की मध्यस्थ भूमिका" प्रस्तुत शोध में इंटरनेट बैंकिंग को अपनाने और उसका उपयोग करने के इरादे पर दृष्टिकोण व्यक्तिपरक मानदंडों और कथित व्यवहारिक नियंत्रण के बीच संबंधों पर महसूस की गई इच्छा की मध्यस्थ भूमिका उपयोगकर्ताओं और गैर-उपयोगकर्ताओं के बीच तथा कम इच्छा और उच्च शिक्षा वाले उपयोगकर्ताओं और गैर-उपयोगकर्ताओं के बीच मिन्न थी। मध्यस्थता प्रभावों पर विश्लेषण के परिणामों में सकेत मिलता है कि महसूस की गई इस गैर-उपयोगकर्ताओं के लिए नियोजित व्यवहार मॉडल के सिद्धांत के सभी तीन संबंधों को नियंत्रित करती है. हालांकि, उपयोगकर्ताओं के लिए नियोजित व्यवहार मॉडल के सिद्धांत में महसूस की गई इच्छा की मध्यस्थ भूमिका पर्याप्त रूप से महत्वपूर्ण नहीं पाई गई।

लीना चौहान (2018) "बडोदरा शहर की विवाहित महिलाओं द्वारा परंतु जिम्मेदारियों के निर्वहन के लिए इंटरनेट का उपयोग" शोध अध्ययन के निष्कर्षों से यह पता चला कि शिक्षा कंप्यूटर और इंटरनेट प्रशिक्षण इंटरनेट उपयोग के पैटर्न और इंटरनेट उपयोग के दौरान उनके अनुभवों ने विवाहित महिलाओं के इंटरनेट उपयोग को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया। इसलिए यह उम्मीद की जा सकती है कि यदि विवाहित महिलाओं को कम्प्यूटर के साथ-साथ इंटरनेट प्रशिक्षण और बेहतर इंटरनेट सेवाएं प्रदान की जाएँ, तो वे अपनी धरेलू जरूरतों के लिए इंटरनेट का अधिक उपयोग करेगी।

मोनिका क. शिकारी (2024) "मध्य और उत्तर किशोरावस्था में समस्याग्रस्त और सामान्य इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के बीच सामाजिक कौशल और जोखिम लेने का व्यवहार" प्रस्तुत शोध में इंटरनेट का उपयोग समग्र सामाजिक कौशल और के सभी पांच आगामी पर महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं डालता है। इंटरनेट का उपयोग केवल खेलकूद और स्वास्थ्य संबंधी जोखिम लेने वाले व्यवहार में ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अलावा इसके औसत स्कोर के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समस्याग्रस्त इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में सामान्य इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की तुलना में कम सामाजिक कौशल और अधिक जोखिम लेने वाला व्यवहार होता है।

शोध की आवश्यकता और महत्व

इस शोध की आवश्यकता इसलिए महसूस की गई क्योंकि आज का मनुष्य अधिक से अधिक अपने प्रियजनों, मित्रों और सहयोगियों के साथ संवाद के लिए इंटरनेट पर आश्रित रहता है। जिससे व्यक्तिगत संपर्क न के बराबर हो गया है। अंततः कहा जा सकता है कि आनलाइन संचार उपकरणों को गति मिली, परंतु इसके विपरीत मानव संपर्क अत्यधिक ही कम हो गया है। अतः आवश्यकता है कि हमें स्वयं का विश्लेषण करना चाहिए कि मनुष्य ने इटरनेट की उत्पत्ति की है नकि इंटरनेट ने मनुष्य की। इस शोध पत्र के माध्यम से इंटरनेट का उपयोग सामाजिक सम्पर्क के रूप में प्रयोग करने से इसका कितना सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, देखने के लिए किया गया है।

समस्या का स्वरूप

यह शोध पत्र इस प्रश्न पर अत्यधिक आधारित है कि "क्या इंटरनेट वास्तव में व्यक्तिगत संपर्क को सशक्त बना रहा है या यह पारंपरिक व्यक्तिगत संबंधों को कमजोर कर रहा है?"

शोध के उदेश्य

- मानव जीवन में इंटरनेट उपयोग का अध्ययन करना।
- शोध पत्र के माध्यम से इंटरनेट की मानव जीवन में प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
- इंटरनेट का उपयोग सामाजिक संपर्क के कथित प्रभाव से संबंधित समस्याओं और उससे संबंधित समाधानों को समझना।
- इंटरनेट का मानव जीवन के व्यक्तिगत संपर्कों में भूमिका का विश्लेषण करना।

शोध प्रश्न

- क्या इंटरनेट ने सामाजिक संपर्क को पहले से अधिक सुलभ और सरल बनाया है?
- इंटरनेट आधारित संपर्क का लोगों के व्यक्तिगत संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
- क्या इंटरनेट के उपयोग से पारम्परिक सम्पर्क कम गया है?

शोध पद्धति-

निष्कर्ष एवं आंकड़ों का विश्लेषण-

वर्तमान समय में इंटरनेट का उपयोग वयस्कों में अत्यधिक पाया जाता है, इंटरनेट के माध्यम से वह लोगों से दोस्ती करने पर अत्यधिक बल देते हैं एवं पेशेवर व्यक्तियों से संपर्क करने के लिए इसको आसान माध्यम मानते हैं।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इंटरनेट ने सामाजिक संपर्क को लेज, सरल और व्यापक बनाया है। यह लोगों को वैश्विक स्तर पर जोड़ने का महत्वपूर्ण साधन बन चुका है। फिर भी अत्यधिक निर्मरता, निजता हानि और व्यक्तिगत संबंधों में दूरी जैसी चनुतियों को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। इसलिए इंटरनेट का उपयोग संतुलित और जागरूक तरीके से करना आवश्यक है।

सदर्भग्रंथ सूची –

[1]. शर्मा, आर. ए.. (2020). संचार माध्यम और समाज. नई दिल्ली: हिंदी ग्रंथ अकादमी।

[2]. सिंह, वी. पी.. (2019). इंटरनेट और सामाजिक परिवर्तन. लखनऊ: भारतीय प्रकाशन।

[3]. कुमार, केवल जे.. (2017). भारत में जनसंचार (हिंदी संस्करण). मुंबई: जैको पब्लिशिंग हाउस। यह पुस्तक जनसंचार, दूरसंचार तथा नई सूचना प्रौद्योगिकी के सामाजिक प्रभावों पर विस्तृत चर्चा करती है।

[4]. सिंघल, अरविंद, एवं रोजर्स, एवरेट एम.. (2001). इंडियाज़ कम्युनिकेशन रिवोल्यूशन: फ्रॉम बुलॉक कार्ड्ड टू साइबर मार्ड्ड. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स। संचार प्रौद्योगिकी एवं इंटरनेट के भारतीय समाज पर प्रभाव का महत्वपूर्ण अध्ययन।

[5]. भार्गव, नरेश, सुधीर, वेददान, चतुर्वेदी, अरुण, एवं लोढ़ा, संजय. (2021). सामाजिक परिवर्तन (समाजशास्त्र रीडर–V). जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स।

[6]. नैयाजी, तबरेज़ अहमद. (2018). Political Communication and Mobilisation: The Hindi Media in India. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस। हिंदी मीडिया और सामाजिक-राजनीतिक संचार पर महत्वपूर्ण पुस्तक।

[7]. दुबे, श्यामाचरण. (2012). भारतीय समाज. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।

[8]. अग्रवाल, जी. के.. (2018). समाजशास्त्र के सिद्धांत. आगरा: साहित्य भवन।

[9]. सिंह, योगेन्द्र. (2015). भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स।

[10]. शर्मा, रामनाथ. (2016). शिक्षा समाजशास्त्र. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।

[11]. मैकाइवर, आर. एम., एवं पेज, चार्ल्स एच.. (हिंदी अनुवाद संस्करण). समाज: एक परिचयात्मक विश्लेषण. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

[12]. गुप्ता, एस. पी.. (2020). सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी के मूल तत्व. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।

[13]. कर्नाडीस सिल्विया (2017) “किशोरों में इंटरनेट के उपयोग और उससे संबंधित कारकों का एक मनवैज्ञानिक अध्ययन”

[14]. बागांजा, प्रिस्का इसिडोर (2017) “ इंटरनेट बैंकिग का उपयोग करने का इरादा उपयोगकर्ताओं और गैर-उपयोगकर्ताओं के बीच अंतर और महसूस की गई इच्छा की मध्यस्थ भूमिका”

[15]. https://www.geeksforgeeks.org/computer-networks/advantages-and-disadvantages-of-internet/

Cite this Article:

अभिषेक सेंगर & ज्योत्सना कुमारी गौतम (2026). इंटरनेट का उपयोग सामाजिक सम्पर्क के साधन के रूप में कथित प्रभाव का अध्ययन. International Journal of Emerging Voices in Education, 2(6), 7–10.

Journal URL: *https://ijeve.com/* ***DOI:*** *https://doi.org/10.59828/ijeve.v2i6.62*